डा० राधाकृष्णन

# भारतीय दर्शन

1

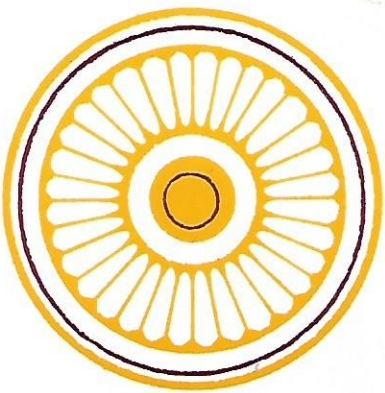

# भारतीय दर्शन-1

वैदिक युग से बौद्ध काल तक

(Indian Philosophy का हिन्दी अनुवाद)

डॉ. राधाकृष्णन

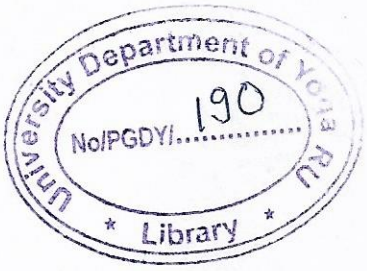


राजपाल

# विषय-सूची

## प्रथम भाग

## वैदिक काल

### पहला अध्याय

विषय-प्रवेश 17-49

भारत की प्राकृतिक स्थिति : भारतीय विचारधारा की सामान्य विशेषताएं : भारतीय दर्शन के विरुद्ध कुछ आरोप : भारतीय दर्शन के अध्ययन का महत्व : भारतीय विचारधारा के विभिन्न काल

### दूसरा अध्याय

ऋग्वेद की ऋचाएं 50-94

वेद : वैदिक सूक्तों के अध्ययन का महत्त्व : वेदों की शिक्षाएं : दार्शनिक प्रवृत्तियां : परमार्थ विद्या : अद्वैतवादी प्रवृत्तियां : एकेश्वरवाद बनाम अद्वैतवाद : सृष्टि-विज्ञान : धर्म : नीतिशास्त्र : परलोकशास्त्र : उपसंहार

### तीसरा अध्याय

उपनिषदों की ओर संक्रमण 95-100

अथर्ववेद : परमार्थ विद्या : यजुर्वेद और ब्राह्मणग्रन्थ : धर्मविद्या : सृष्टि-सम्बन्धी सिद्धान्त : नीतिशास्त्र : परलोक शास्त्र

### चौथा अध्याय

उपनिषदों का दर्शन 111-218

उपनिषद् : उपनिषदों की शिक्षा : उपनिषदों की संख्या और रचनाकाल : उपनिषदों के रचयिता : ऋग्वेद की ऋचाएं और उपनिषदें : उपनिषदों के विषय : यथार्थता का स्वरूप : ब्रह्म : ब्रह्म और आत्मा : प्रज्ञा और अन्तर्दृष्टि :

सृष्टि-रचना : यथार्थसत्ता की अवस्थाएं : जीवात्मा : उपनिषदों का नीतिशास्त्र : आर्थिक चेतना : मोक्ष या मुक्ति : पाप और दुःख : कर्म : पारलौकिक जीवन : उपनिषदों का मनोविज्ञान : उपनिषदों में सांख्य और योग के तत्त्व : दार्शनिक अग्रनिरूपण

## द्वितीय भाग

# महाकाव्य काल

### पांचवां अध्याय

भौतिकवाद 219-231

महाकाव्य काल : इस काल के प्रचलित विचार : भौतिकवाद : भौतिक सिद्धान्त : सामान्य समीक्षा

### छठा अध्याय

जैनियों का अनेकान्तवादी यथार्थवाद 232-275

जैनमत : वर्धमान : जैन साहित्य : अन्य पद्धतियों के साथ सम्बन्ध : ज्ञान का सिद्धांत : जैन तर्कशास्त्र का महत्त्व : मनोविज्ञान : तत्त्वविद्या : नीतिशास्त्र : ईश्वरवाद के सम्बन्ध में जैनदर्शन का मत : निर्वाण : उपसंहार

### सातवां अध्याय

प्रारम्भिक बौद्धमत का नैतिक आदर्शवाद 276-389

प्रारम्भिक बौद्धमत : बौद्ध विचारधारा का विकास : साहित्य : बुद्ध का जीवनवृत्त और व्यक्तित्व : तात्कालिक परिस्थितियां : बुद्ध और उपनिषदें : दुःख : दुःख के कारण : परिवर्तनशील जगत् : जीवात्मा : नागसेन का आत्मविषयक सिद्धान्त : मनोविज्ञान : प्रतीत्यसमुत्पाद, या आश्रित उत्पत्ति का सिद्धान्त : नीतिशास्त्र : कर्म एवं पुनर्जन्म : निर्वाण : ईश्वर के सम्बन्ध में बुद्ध के विचार : कर्म के संकेत : क्रियात्मक धर्म : ज्ञान-विषय सिद्धान्त : बौद्धधर्म और उपनिषदें : बौद्धधर्म और सांख्यदर्शन : बौद्धधर्म की सफलता

### आठवां अध्याय

महाकाव्यों का दर्शन 390-423

ब्राह्मणधर्म का पुनर्गठन : महाभारत : महाभारत का रचनाकाल और उसके

रचयिता : रामायण : तत्कालीन सामान्य विचार : दुर्गापूजा : पाशुपत पद्धति : वासुदेव कृष्ण : महाकाव्यों का संसृतिशास्त्र : नीतिशास्त्र : श्वेताश्वतर उपनिषद् : मनुस्मृति

## नवां अध्याय

भगवद्गीता का आस्तिकवाद 424-476

भगवद्गीता : गीता का काल : अन्य पद्धतियों के साथ सम्बन्ध : गीता का उपदेश : परम यथार्थता : परिवर्तनमय जगत् : जीवात्मा : नीतिशास्त्र : ज्ञानमार्ग : भक्तिमार्ग : कर्ममार्ग : मोक्ष

## दसवां अध्याय

बौद्धमत : धर्म के रूप में 477-500

बौद्धमत के सम्प्रदाय : हीनयान : महायान : महायान की तत्वमीमांसा : महायान धर्म : नीतिशास्त्र : भारत में बौद्धधर्म का ह्रास : भारतीय विचारधारा पर बौद्धधर्म का प्रभाव

## ग्यारहवां अध्याय

बौद्धमत की शाखाएं 501-548

बौद्धधर्म के चार सम्प्रदाय : वैभाषिक नय : सौत्रान्तिक नय : योगाचार नय : माध्यमिक नय : ज्ञान का सिद्धान्त : सत्य और यथार्थता की श्रेणियां : शून्यवाद और उसका तात्पर्य : उपसंहार

## परिशिष्ट

कुछ समस्याओं का पुनर्विवेचन 549-576

विषय-प्रवेश की विधि : तुलनात्मक दृष्टिकोण : उपनिषदें : प्राचीन बौद्धधर्म-निषेधात्मक, नास्तिकवादी और विध्यात्मक विचार : प्राचीन बौद्धधर्म और उपनिषदें : प्राचीन बौद्धधर्म के निकाय : नागार्जुन का यथार्थता सम्बन्धी सिद्धान्त : शून्यवाद और अद्वैत वेदान्त

टिप्पणियां 577-597

महान् भारतीय दार्शनिक और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन ने भारतीय दर्शन की तर्क और विज्ञान के आधार पर व्याख्या की और उसे पूरी दुनिया तक पहुँचाया। उनका विश्वविख्यात ग्रंथ *इंडियन फिलॉसफी* वर्षों तक ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में पाठ्यक्रम के रूप में पढ़ाया जाता रहा। प्रस्तुत ग्रंथ *इंडियन फिलॉसफी* का प्रामाणिक हिंदी अनुवाद है। वैदिक काल से लेकर आज तक भारतीय दर्शन ने जो पड़ाव पार किए हैं, इस ग्रंथ में उन सभी का क्रमिक विवेचन किया गया है। इसकी विशेषता यह है कि भारतीय दर्शन के विभिन्न सिद्धांतों की तुलना इसमें दुनिया के विभिन्न मतों और दर्शनों से की गई है। विषय के अत्यंत गूढ़ और गहन होने के बावजूद प्रस्तुत ग्रंथ की भाषा सहज और सरल है।

₹ 525
9788170281870
राजपाल